ईतनी बिनती

ईतनी बिनती रघुनन्दन से, दुखद्वन्द्व हमारा मीटा ओ जी।

अपने पदपङ्कज पिञ्जर में। चितहंस हमारा बैठा ओ जी।

तुलसीदास कहे कर जोड़ी, भवसागर पार उतारो जि॥